एक विदेशी गाय

अन्य विदेशों के मुकाबले में हमारे पशु और गाय बेकार प्रतीत होते हैं। अन्य उन्नत देशों में जितना ध्यान पशुओं की उन्नति की ओर दिया जाता है, उतना भारत में नहीं देते। परन्तु हम उन्हें जो खिलाते हैं, उस हिसाब से यदि उनके काम का मूल्य लगाकर देखें, तो वे उतने निकम्मे नहीं हैं, जितने दीखते हैं। राष्ट्र की उन्नति के लिए उन्हें खत्म होने से बचाना होगा। उन्हें अच्छा खाना मिलने और उनकी अच्छी तरह देखभाल होने पर वे निश्चय ही तेजी से उन्नति करेंगे और काफी अच्छा काम भी देने लग जायँगे। जब तक उन्हें अच्छा खाना नहीं दिया जाता, उनसे अच्छे काम की आशा कैसे की जा सकती है? आज तो यह हालत है कि उन्हें बगैर खिलाये हम उनसे दूध और काम की आशा कर रहे हैं। क्या बगैर तेल, कोयला आदि के हम किसी मशीन से काम लेने की आशा कर सकते हैं? जिन जानवरों को हमने बेकार समझ रखा है, उन्हींकी यदि ठीक देखभाल की जाय, तो वे ही लाभ-दायक बन सकते हैं। उन्हें खिलाकर देखिये कि वे कितना काम देते हैं। जितना अच्छा उनको खाना मिलेगा, वे उतना ही अधिक अच्छा काम देंगे। हमारे यहाँ ऐसी गायें हैं, जो एक ही नस्ल की, उसी जगह की दूसरी गायों के मुकाबले चार-चार, पाँच-पाँच गुना दूध अधिक देती हैं। इसी प्रकार बैल भी अच्छा काम करते हैं। एक सौ पौंड दूध उत्पन्न करने में ब्याज और छीजन सहित वास्तव में जो खर्च भारत और संयुक्तराज्य अमेरिका में पड़ता है, उसका विवरण नीचे दिया जाता है :

भारत और संयुक्तराज्य अमेरिका में १०० पौंड दूध के उत्पादन पर तुलनात्मक खर्च

भारत में	अमेरिका में
१. एक साधारण औसत दर्जे की गाय से वर्ष में दूध की प्राप्ति। ५०० पौंड	१. एक साधारण औसत दर्जे की गाय से वर्ष में दूध की प्राप्ति। ५००० पौंड

२. ऐसी साधारण गाय की कीमत १२५·०० रु०	२. ऐसी साधारण गाय की कीमत १०००·०० रु०
३. कीमत पर १० प्रतिशत छीजन १२·५ रु०	३. कीमत पर १० प्रतिशत छीजन १०० रु०
४. ब्याज लागत पर ७½ प्रतिशत वार्षिक के हिसाब से घटती-बढ़ती लागत पर या ४ प्रतिशत वार्षिक मोटे तौर पर सौदे आरम्भ की लागत पर ५·०० रु०	४. ब्याज लागत पर ७½ प्रतिशत वार्षिक के हिसाब से घटती-बढ़ती लागत पर या ४ प्रतिशत वार्षिक मोटे तौर पर सौदे आरम्भ की लागत पर ४०·०० रु०
५. चारे की कीमत (८ महीने के लिए १८ मन की कीमत और २ रु० प्रतिमन के भाव से, ४ महीने की चराई मुफ्त) ३६·०० रु०	५. २·५० रु० प्रतिमन के भाव से १२ महीनों के लिए ७२ मन चारा १८०·०० रु०
६. खली-दाना सांट की लागत ०·०० रु०	६. तीन पौंड दूध पर एक पौंड बाँट या दाना इस हिसाब से २०·८३ मन की कीमत १२ रु० प्रतिमन के भाव से २४९·९६ रु०
७. अन्य फुटकर खर्च ५·०० रु०	७. अन्य फुटकर खर्च— ५०·०० रु०
८. कुल खर्च ५३·५० रु०	८. कुल खर्च ६१९·९६ रु०
९. भारत में १०० पौंड दूध पर खर्च— १०·८० रु०	९. अमेरिका में १०० पौंड दूध पर खर्च— १२·४० रु०

भारतवर्ष में राजकीय सैनिक दुग्धशालाओं और पूसा-इन्स्टीच्यूट में हमारे पशुओं का जैसा पालन-पोषण होता है, वैसा ही उपर्युक्त देशों में आमतौर से पशुओं का पालन पोषण होता है। यदि हमारे पशुओं का उचित ढंग से पालन-पोषण किया जाय, उनकी नस्ल-सुधार और उनकी पूरी देखभाल की जाय, तो हमारे पशु भी दूसरे देशों के औसत दर्जे के पशुओं से दूध तथा अन्य लाभ देने में पीछे न रहेंगे। आज हमारे पशुओं में उन्नतिशील देशों के मुकाबले में कहीं अधिक दूध देने और काम करने की छिपी हुई योग्यता भरी हुई है, केवल उसके विकास की जरूरत है।

हमारे विकास के प्रोग्राम इस प्रकार होने चाहिए कि किसी चीज का अभाव न रहे। इसके साथ-साथ उसके उत्पादन पर भी हमारी आवश्यकता के अनुसार नियन्त्रण रहना चाहिए, जिससे आवश्यकता से अधिक उत्पादन होने पर हमें उसके निर्यात पर निर्भर न होना पड़े। इसका मतलब यह नहीं कि आयात-निर्यात पर पाबन्दी हो, बल्कि ऐसा करने से हम दूसरों पर निर्भर न रहकर आत्मनिर्भर बनेंगे। भारतवर्ष में लगभग ८० प्रतिशत मनुष्य गाँवों में रहते हैं। पशु-पालन तथा कृषि ही वहाँ का मुख्य उद्यम है। एक के द्वारा पैदा किया हुआ पदार्थ दूसरे के द्वारा उपयोग में लाया जाता है। इस प्रकार दोनों (उत्पादक और उपभोक्ता) का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है और वे दोनों ही मनुष्य की अधिकांश जरूरतों को पूरा करते हैं। पशु-पालन और कृषि में यदि अतिरिक्त उत्पादन होता है, तो उसे आसानी से उपयोग में लाया जा सकता है और उनमें सरलता से संतुलन तथा समता कायम रखी जा सकती है।

इस अवसर पर जब कि अनेक घरेलू उद्योग बढ़ाये जा रहे हैं और उत्पादन भी काफी मात्रा में बढ़नेवाला है, गाँव के लोगों में खरीदने की शक्ति का बढ़ना बहुत आवश्यक है। ग्राम-प्रधान भारतवर्ष में पशु-पालन के विकास द्वारा निश्चित रूप से मनुष्यों की क्रय (खरीदने) की शक्ति काफी हद तक बढ़ाई जा सकती है।

देश की और देश के व्यक्ति की आमदनी में वृद्धि होना निश्चित रूप से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। लेकिन आज की स्थिति में, जहाँ तक रोजगार मिलने से संबंध है, उसका बढ़ती हुई आबादी के साथ कदम नहीं मिलाया जा सका है। इसलिए आबादी की वृद्धि के अनुसार रोजगार भी बढ़ने चाहिए। सबसे अधिक बेरोजगार और थोड़े रोजगार पानेवाले मनुष्य गाँवों में ही पाये जाते हैं। गाँव के लोग सबसे ज्यादा लाचार और गरीब हैं। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में बेकार मनुष्यों को रोजगार देने के लिए अधिकाधिक रोजगार बढ़ाने होंगे। भारतवर्ष में ग्रामीण मनुष्यों के लिए खेती के साथ चलनेवाले उद्योग (Side industry) तथा अन्य ऐसे पेशों का होना अत्यन्त जरूरी है। ऐसा करने से शीघ्र विकास की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं। पशु-पालन का उद्योग किसान के लिए केवल खेती के साथ चलनेवाला एक अतिरिक्त धन्धा ही नहीं है, बल्कि यह कृषि-व्यवसाय का पूरक है और नये रोजगारों के लिए बहुत बड़ा रास्ता तैयार करता है।

भारतवर्ष में, १९५२-५३ में दी हुई संख्या के आधार पर काम में लगे हुए मनुष्यों की आय

(काम में लगे हुए प्रतिव्यक्ति की वार्षिक आय)

१. डाक, रेल, बैंक और बीमा के कार्य में लगे हुए		२२५० रु०
२. खानों और फैक्टरियों के कार्य में लगे	,,	२२२५ रु०
३. अन्य व्यापार तथा यातायात के कार्य में लगे	,,	१५१० रु०
४. राजकीय प्रशासन, व्यापार, निजी कला-कौशल में लगे	,,	११६१ रु०
५. छोटे उद्योग और व्यवसायों (साहसिक उद्योगों) में लगे	,,	८५० रु०
६. कृषि तथा अन्य मिले-जुले उद्योगों, जिनमें पशु-पालन भी शामिल है, के कार्य में लगे	,,	४८२ रु०
सबकी औसत		७१० रु०

अब यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि जब तक राष्ट्रीय आय के विनियोग में संतोषजनक सुधार नहीं होगा, तब तक हमारे देश की अर्थ-व्यवस्था उस समाजवाद के आदर्श पर नहीं चल सकती, जिसके लिए हम आजकल प्रयत्नशील हैं। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में ८२·८ प्रतिशत आदमी मिलते हैं, जिनको केवल ६४·६ प्रतिशत आमदनी होती है। परन्तु इसके विपरीत छोटे-बड़े नगरों में १७·२ प्रतिशत लोग दिमागी मेहनत करनेवाले अनेक प्रकार के व्यापार और नौकरियों में लगे हुए हैं, उनकी ३५·५ प्रतिशत आय है (कृपया पृष्ठ ३-४ पर दी हुई संख्याएं देखिए)। आमदनी की इस असमानता को दूर कर देना चाहिए, क्योंकि इसी असमानता के कारण गाँव के लोग नगरों और कस्बों की तरफ दौड़ रहे हैं। इन लोगों के आने के कारण ही शहरों में पढ़े-लिखे और दूसरे लोगों में बेरोजगारी फैल रही है। गाँवों में खेती के साथ चलनेवाले अतिरिक्त उद्योगों को चालू करके और उनको अधिकाधिक बढ़ाकर शहर की तरफ बढ़ती हुई ग्रामीणों की भीड़ को रोका जा सकता है और दोनों की बेरोजगारी एक बड़ी हद तक रोकी जा सकती है।

अनेक वस्तुएँ जो आज बड़े पैमाने पर बनाई जाती हैं, विकेन्द्रित आधार पर गाँवों के घरों में उत्पन्न की जाने लगें, तो भी सभी बिलकुल और आंशिक बेकार लोगों को पूरा काम मिलना असम्भव है। अखिल भारतीय खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा प्रकाशित "पूर्ण (भरपूर) रोजगार देने की योजना" में दी हुई एक तालिका :

फैक्टरियों और बड़े-बड़े कारखानों में उपभोक्ताओं के लिए ऐसा माल तैयार करनेवाले व्यक्तियों की संख्या, जो घरेलू उद्योगशालाओं में तैयार किया जा सकता है :

कपड़ा-उद्योग में	८७४३२१
रेशमी माल की मिलों में	२२२८९
ऊनी माल की मिलों में	२२०८७

अन्न तथा दालों की चक्कियों और मिलों में	६५४६२
तेल की मिलों में	४२२१५
चमड़े के सामान की फैक्टरियों में	३०८८९
लकड़ी चीरने के कारखानों में	३६३९
माचिस की फैक्टरियों में	२०६१०
अन्य ऐसे बड़े कारखानों में	११००७०
	१२,००,०००

नोट : ऊपर बताये हुए उद्योगों के अलावा अनेक ऐसे उद्योग हैं, जो उत्पादकों के लिए और उपभोक्ताओं के लिए ऐसा माल तैयार करते हैं, जो विकेन्द्रित व्यवस्था के आधार पर सम्भवतः घरों में तैयार नहीं किया जा सकता, उनकी अवहेलना की गई है।

इन फैक्टरियों में काम करनेवाले एक आदमी का काम घरेलू विकेन्द्रित उद्योगों में काम करनेवाले लगभग पाँच आदमियों के काम के बराबर होता है। यदि हम इन सब फैक्टरियों और कारखानों को खत्म करने के असम्भव कार्य को फौरन ही सफलतापूर्वक करने में सफल हो जायँ, तो उपर्युक्त संख्या के अनुसार ४८ लाख और आदमियों को रोजगार मिल सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि लाखों मनुष्य बढ़ती हुई आबादी के भोजन और मनोरंजन की व्यवस्था करने तथा उनके जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने के कार्य में लग जायँगे। लेकिन इसके विपरीत यदि कृषि-गोपालन में लगे हुए व्यक्तियों की प्रतिव्यक्ति ऊपर दी हुई ४८२ रुपया वार्षिक आमदनी मान ली जाय, तो अतिरिक्त रोजगार या काम, दो करोड़ व्यक्तियों के कार्य के मूल्य के बराबर गोपालन के कार्य से उत्पन्न किया जा सकता है। गोपालन के विकासकार्य को प्राथमिकता देकर वैज्ञानिक रीति से विधिपूर्वक संलग्नता से किया जाय, तो इसमें कोई सन्देह की बात नहीं है कि देश को करीब ६०० + ४०० = १००० करोड़ रुपये की अतिरिक्त आमदनी हो सकती

है। उपर्युक्त आमदनी का लाभ देश के गरीब और दुःखी ग्रामीणों को होगा। इसके लिए प्रारम्भिक पूँजी कम-से-कम चाहिए, जो नहीं के बराबर होगी। इससे इसका महत्त्व और भी अधिक प्रकाश में आता है।

जो लोग कृषि-व्यवसाय में लगे हुए हैं और खेती के काम में पूरे वर्ष बराबर काम न होने के कारण खाली रहते हैं, उन लोगों को ऐसा काम देने का प्रश्न भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, जिससे पूरे वर्ष वे बराबर काम में लगे रह सकें। चारा पैदा करने, घास काटने, साइलेज बनाने, पशु चराने, घास सुखाने, दूध दुहने, पशु और दूध-सम्बन्धी दूसरे कार्य उन्हें बराबर पूरे वर्ष काम में लगाये रखेंगे और इस प्रकार उनकी उपार्जन-शक्ति व्यर्थ न जायगी।

इस योजना के द्वारा उन्हें अधिक काम मिल जायगा और उनका काम अच्छी तरह बँट जायगा। इसके अलावा आज की स्थिति में यदि किसी वर्ष अकाल पड़ जाता है तो किसान बरबाद हो जाता है और बड़ी भारी मुसीबत में पड़ जाता है। परन्तु अब ऐसा नहीं होगा, क्योंकि खेती के साथ पशु-पालन इस मात्रिक चलेगा कि किसान को दोनों से आमदनी होगी और दोनों की आमदनी से उसकी मुसीबत कम हो जायगी। यह भी एक महत्त्वपूर्ण लाभ है, जैसा कि निम्नलिखित विवरण से स्पष्ट है :

भारत में खेती के चार मौसम

	मौसम	बोनी का समय	कटनी का समय	मुख्य फसलें	अन्य कार्य
१.	खरीफ	मई से जुलाई	सितम्बर से नवम्बर तक	ज्वार, मक्का, धान, तिल्ली, मूँगफली, सन, कपास, उड़द, बाजरा आदि	जुलाई से अगस्त, पशुओं को क्रम से बाड़ों में चराइये।
२.	जायद रबी	अगस्त से सितम्बर	दिसम्बर से फरवरी तक	सरसों, राई, तोरिया, गाजर, शलजम, मटर (फील्ड पीज) आदि तथा अन्य चारे की फसलें।	अगस्त से सितम्बर तक साइलेज बनाइये।
३.	रबी	जाड़े का प्रारम्भ अक्तूबर से दिसम्बर	फरवरी से मई तक	गेहूँ, जौ, जई, बरसीम, रिजका, सेंजी, आलू, चना, अलसी, मटर आदि तथा चारे की अन्य फसलें।	नवम्बर से दिसम्बर तक, बोई हुई खड़ी फसलों में से घास-पतवार निकालकर पशुओं को खिलाइये।
४.	जायद खरीफ	मौसम गर्म होने पर फरवरी से मार्च	अप्रैल के मध्य से जून और अगस्त तक	ज्वार, बाजरा, मक्का, खरीफ के द्विदल और हरी घास की फसलें आदि।	मई और जून में, बची हुई हरी चारे की फसल को सुखाकर रखिये।

इससे स्पष्ट है कि यदि वे जायद रबी और जायद खरीफ की चारे की फसलें भी बोने लग जायँ, तो अपने फालतू समय का अधिक अच्छा उपयोग कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मई तथा जून में उन्हें जायद रबी की फसलों की कटनी करके जायद खरीफ की फसलों के लिए जमीन जोतनी पड़ेगी। साइलेज बनाना और घास सुखाने का काम करना होगा, इस कारण परिवार के दूसरे लोगों को भी काम मिल जायगा। इस तरह कुल मिलाकर घास और अनाज की पैदावार भी बढ़ेगी, जानवर हृष्ट-पुष्ट होंगे। खुद किसान की आमदनी बढ़ेगी और घर के आदमियों के फालतू समय का अच्छा उपयोग हो जायगा।

पशु-पालन के विकास-कार्य को शुरू करने के लिए कोई खास प्रारम्भिक पूँजी की जरूरत नहीं है। चारे की फसल की वृद्धि बिना विशेष अतिरिक्त लागत के हो सकती है। करीब १० करोड़ भूमि में जहाँ पानी की कमी नहीं है और ५ करोड़ पड़ती भूमि में दो मुख्य फसलों के बीच में चारे की अतिरिक्त फसल पैदा करने के लिए किसान को बीज और पानी के अलावा अपनी जेब से कुछ भी खर्च न करना पड़ेगा, जिन्हें वह आसानी से बरदाश्त कर सकता है। फलतः पशुओं के विकास के लिए किसान पर कोई अतिरिक्त भार न पड़ेगा और न उसे इस कार्य के लिए धन इकट्ठा करने की ही जरूरत पड़ेगी।

जहाँ तक हमारा कृषि-उत्पादन से संबंध है, इसे अपनी जरूरत के अनुसार आसानी से बढ़ाया जा सकता है। बेखटके यह कहा जा सकता है कि भविष्य में इसका उत्पादन निश्चित रूप से हमारी जरूरत से भी अधिक बढ़ाया जा सकता है; क्योंकि भारत में एक ही फसल की प्रति-एकड़ औसत पैदावार और प्रति-एकड़ अधिकतम पैदावार में ६ से लेकर १० गुने तक का अन्तर है। कुछ फसलों में तो यह अन्तर और भी अधिक पाया जाता है। अतः जहाँ तक मनुष्य की खुराक, उत्पादन का संबंध है, हमें जनसंख्या की वृद्धि से भयभीत नहीं होना चाहिए। लेकिन

तालिका : अ

विभिन्न प्रकार के चारे और बीजों की तुलनात्मक लागत

(सभी संख्याएँ अनुमानित हैं)

	१०० पौंड पदार्थ में औसतन सूखे तत्त्व	१०० पौंड पदार्थ में औसतन पचनशील साधारण प्रोटीन Dry.Matter	१०० पौंड पदार्थ में औसतन कुल पचनशील तत्त्व (T. D. N.)	पचनशील पदार्थों का औसतन अनुपात (N. R.)	प्रति एकड़ औसतन पैदावार पौंड में	पैदावार की औसत लागत प्रति-एकड़ (रुपयों में)	औसतन लागत प्रति १०० पौंड पैदावार पर रुपयों में	पचनशील तत्त्वों की १०० पौंड की औसत लागत रुपयों में	एक एकड़ भूमि में औसतन उत्पत्ति कुल पचनशील पदार्थों की, पौंड में
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१. सभी प्रकार की खली, दाना या रातव···	९०	१६·६६	७५	१ : ३·५	१०००	१००·००	१०·००	१३·३०	७५०
२. सभी तरह का भूसा और दूसरा चारा, जिसमें अनाज के छिलके भी शामिल हैं···	९०	१·३२	३३	१ : २४·०	३०००	५०·००	०१·६६	५·००	९९०
३. मिली हुई ताजा और हरी घासें, जिसमें द्विदल जाति के पौधे भी शामिल हैं, फूलवाली या अनाज पड़ने की अवस्था में···	२०	२·००	१५	१ : ६·५	४००००	२२५·००	००·५६	३·६६	६०००

'मंडल' का ग्रामोपयोगी साहित्य

१. खादी द्वारा ग्राम-विकास
२. ग्राम-सुधार
३. चारादाना
४. पशुओं का इलाज
५. हमारे गांवों की कहानी
६. सहकारी समाज
७. आधुनिक सहकारिता
८. ग्रामोद्योग
९. पंचायत राज

सस्ता साहित्य मण्डल

पचहत्तर नये पैसे